सौरा चित्रकला में तकनीकी बदलाव : परंपरा से आधुनिकता की ओर

Priyanka Singh[1], Meenakshi Thakur[2]

[1]Research Scholar (Ph.D.), Dayallbagh Educational institutions, Agra
[2]Associate Professor, Dayallbagh Educational institutions, Agra

सारांश (Abstract) —

प्रस्तुत शोध पत्र ओडिशा की प्रसिद्ध जनजाति लांजिया सौरा की पारंपरिक चित्रकला में आ रहे तकनीकी और व्यावहारिक बदलावों का अध्ययन करता है। सौरा समाज में इस कला को 'इदिताल' कहा जाता है, जो मूल रूप से घर की मिट्टी की दीवारों पर धार्मिक अनुष्ठानों के समय बनाई जाती थी। वर्तमान समय में वैश्वीकरण और बाजार की माँग के कारण इस कला के माध्यमों में बहुत बड़ा बदलाव आया है। अब यह कला भित्ति-चित्रों से निकलकर कैनवास, वस्त्र, काँच, और लकड़ी जैसी आधुनिक सतहों पर बनाई जा रही है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि धरातल, रंग और औजारों के बदलने से सौरा कला के मूल रूप और उनके सामाजिक - आर्थिक परिदृश्य पर क्या प्रभाव पड़ा है।

मुख्य शब्द (Keywords) — सौरा चित्रकला, इदिताल, तकनीकी बदलाव, बाजारीकरण, आधुनिक कैनवास, पारंपरिक माध्यम।

प्रस्तावना (Introduction)

कला किसी भी समाज की संस्कृति, चेतना और उसके ऐतिहासिक संक्रमण की जीवंत अभिव्यक्ति होती है। भारतीय जनजातीय कलाओं में ओडिशा की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक विशिष्ट स्थान है। इसी धरोहर में से एक 'लांजिया सौरा' जनजाति की पारंपरिक चित्रकला है, जो अपनी प्राचीनता, सादगी और गहन आनुष्ठानिक जुड़ाव के लिए वैश्विक स्तर पर जानी जाती है। मुख्य रूप से ओडिशा के रायगड़ा, गजपति, और कोरापुट जैसे दुर्गम पहाड़ी अंचलों में निवास करने वाली यह जनजाति आज भी अपनी सदियों पुरानी परंपराओं को संजोए हुए है। स्थानीय स्तर पर इस जनजाति द्वारा बनाई जाने वाली आनुष्ठानिक चित्रकला को 'इदिताल' (Idital) कहा जाता है।

पारंपरिक सौरा समाज में इन चित्रों का स्थान केवल सौंदर्यशास्त्र या गृह-सज्जा तक सीमित नहीं था। इसके विपरीत, यह कला सीधे तौर पर उनके धार्मिक जीवन, पारलौकिक आस्थाओं, लोक-कथाओं और उनके पूर्वजों की अदृश्य दुनिया से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी। यह कला मूलतः एक पवित्र माध्यम थी, जिसके द्वारा सौरा लोग अपने जीवन की विसंगतियों, संकटों और खुशियों को एक दृश्य रूप प्रदान करते थे।

पारंपरिक रूप से यह कला कभी भी किसी बाहरी प्रदर्शन, व्यावसायिक लाभ या कला दीर्घाओं (Art Galleries) के लिए नहीं बनाई जाती थी। यह एक पूर्णतः व्यक्तिगत और सामुदायिक अनुष्ठानिक क्रिया थी। जब भी सौरा परिवार में कोई गंभीर बीमारी आती थी, नई फसल की कटाई का समय होता था, शादी-ब्याह जैसे मांगलिक अवसर होते थे, या परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु का शोक होता था; तब जनजाति के ओझा या मुख्य पुजारी (जिसे स्थानीय भाषा में 'कुडंघ' कहा जाता है) की सलाह ली जाती थी। कुडंघ की आध्यात्मिक गणना के अनुसार, घर की सबसे अंदर की दीवार पर जहाँ सूर्य का प्रकाश

बहुत कम या न के बराबर पहुँचता था इन पवित्र चित्रों को उकेरा जाता था। सौरा समुदाय का यह अटूट विश्वास था कि 'इदिताल' के इन चित्रों के माध्यम से वे अपने पूर्वजों की भटकती हुई आत्माओं को आदरपूर्वक अपने घर में आमंत्रित करते हैं, ताकि वे आत्माएँ उनके परिवार, मवेशियों और फसलों की प्राकृतिक आपदाओं व बुरी शक्तियों से रक्षा कर सकें।

परंतु, इक्कीसवीं सदी के इस दौर में वैश्वीकरण (Globalization), बाज़ारीकरण (Commercialization) और तीव्र तकनीकी विकास के प्रभाव से यह जनजातीय कला भी अछूती नहीं रही है। पिछले कुछ दशकों में इस कला के आंतरिक और बाह्य स्वरूप में एक व्यापक संरचनात्मक और माध्यमगत बदलाव देखने को मिला है। यह कला अब मिट्टी की कच्ची और खुरदरी दीवारों के सीमित दायरे से बाहर निकलकर समकालीन शहरी बाज़ारों, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों, आधुनिक कैनवास, सिल्क के कपड़ों, काँच, कागज़ और लकड़ी की सजावटी वस्तुओं तक का एक लंबा सफ़र तय कर चुकी है। माध्यमों का यह भौतिक बदलाव केवल कला की ऊपरी सतह तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने कला की दृश्य-भाषा (Visual Language), प्रतीकों के चयन, कलाकारों की लैंगिक भूमिकाओं और कला के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को भी बुनियादी रूप से प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र इसी तकनीकी यात्रा, माध्यमगत रूपांतरण और उसके परिणामस्वरूप सौरा समाज व उनकी कला संस्कृति पर पड़ने वाले बहुआयामी प्रभावों का एक व्यवस्थित और आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

1. 'इदिताल' का धार्मिक, आध्यात्मिक एवं आनुष्ठानिक महत्व

सौरा चित्रकला के तकनीकी बदलावों को समझने से पूर्व इसके पारंपरिक आनुष्ठानिक और दार्शनिक आधार को समझना अत्यंत आवश्यक है। सौरा समाज में 'इदिताल' महज़ रेखाओं और आकृतियों का संयोजन नहीं है, बल्कि यह उनके समूचे ब्रह्मांड विज्ञान (Cosmology) का एक दृश्य दस्तावेज़ है। सौरा जनजाति प्रकृति-पूजक होने के साथ-साथ जीवात्मवाद (Animism) में गहरा विश्वास रखती है, जहाँ प्रकृति के हर कण–पेड़, पहाड़, नदी, पशु–में एक चेतना या आत्मा का वास माना जाता है।

चित्र संख्या-1- इदिताल'

माध्यम - केनवास पर एक्रेलिक रंग से बनाया गया

स्रोत-ओडिशा राज्य जनजातीय संग्रहालय भुवनेश्वर

2- मुख्य देवता और मिथकीय कथाएँ

सौरा पौराणिक कथाओं के केंद्र में उनके सर्वोच्च देवता 'कितुंग' (Kitung) या 'इदुबोई' हैं। सौरा समाज का मानना है कि संसार की रचना, कृषि का ज्ञान और कला का बीजारोपण स्वयं कितुंग देवता ने किया था। इदिताल के चित्रों में कितुंग देवता के जीवन, उनकी शक्तियों और उनके द्वारा बनाए गए नियमों को विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया जाता है। चित्रों में दिखने वाले वृक्ष, जंगली जानवर और मानव आकृतियाँ वास्तव में कितुंग के संसार के विभिन्न घटकों का प्रतिनिधित्व करती

हैं। जब कोई चित्रकार दीवार पर रेखाएँ खींचता है, तो वह वास्तव में एक नए ब्रह्मांड की रचना कर रहा होता है, जिसमें लौकिक और पारलौकिक दोनों संसार एक बिंदु पर आकर मिल जाते हैं। सौरा पौराणिक कथाओं में एक विस्तृत देवकुल का वर्णन मिलता है, जहाँ विभिन्न प्राकृतिक तत्वों, बीमारियों, कृषि और रोजमर्रा के जीवन को नियंत्रित करने वाले अनेक देवी-देवता शामिल हैं। वेरिअर एलविन के नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययनों के अनुसार, सौरा समाज में इन पारलौकिक शक्तियों का चित्रण इदिताल के प्रतीकों के माध्यम से ही संभव होता है। इस देवकुल के केंद्र में उनके सर्वोच्च देवता 'कितुंग' (Kitung) या 'इदुबोई' हैं, जिन्हें समूची सृष्टि, मानव जीवन और कला का मूल रक्षक व निर्माता माना जाता है। चित्रों में दिखने वाले विभिन्न दृश्य वास्तव में कितुंग के संसार का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। सौरा चित्रकला में आकृतियों के चयन के पीछे गहरे धार्मिक कारण होते हैं; उदाहरण के लिए, गाँव के रक्षक देवता 'बबुसुम' (Babusum) को पारंपरिक आख्यानों में रात के समय घोड़े पर सवार होकर गाँव का चक्कर लगाते हुए कल्पित किया जाता है, यही कारण है कि इदिताल के चित्रों में 'घुड़सवारों' और तीरों का अंकन बहुत प्रमुखता से किया जाता है। इसी तरह, चील के उग्र देवता 'अडांगसुम' (Adangsum) और जल-धाराओं के सर्प-देवता 'अजोरसुम' (Ajorasum) को शांत करने के लिए चित्रों में क्रमशः पक्षियों और साँपों के प्रतीकों को स्थान दिया जाता है। जब कोई चित्रकार दीवार पर रेखाएँ खींचता है, तो वह वास्तव में इन सभी शक्तियों को एक ही धरातल पर आमंत्रित कर रहा होता है। इसलिए, चित्रों में दिखने वाले वृक्ष, जंगली जानवर, मवेशी और मानव आकृतियाँ महज़ सजावट नहीं, बल्कि इसी जटिल देवकुल के विभिन्न घटकों का दृश्य प्रतिनिधित्व हैं।

चित्र संख्या-2 जनानग्लो सुम (Jananglo Sum)
स्रोत-ओडिशा राज्य जनजातीय संग्रहालय भुवनेश्वर

3- अनुष्ठानिक प्रक्रिया और 'कुडंन ' की भूमिका

सौरा समाज में कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से जब चाहे दीवार पर इदिताल नहीं बना सकता था। इसके लिए एक कड़े धार्मिक अनुशासन का पालन करना पड़ता था। चित्र बनाने की प्रक्रिया पूरी तरह से 'कुडंन' (पुजारी व ओझा) के आध्यात्मिक निर्देशों पर निर्भर करती थी। उदाहरण के लिए, यदि परिवार में कोई रहस्यमयी बीमारी आ जाती थी, तो कुडंन सम्मोहन की स्थिति में जाकर यह पता लगाता था कि कौन सा पूर्वज या कौन सी आत्मा नाराज़ है। उस आत्मा को शांत करने के लिए एक विशिष्ट प्रकार के चित्र (जिसमें उस आत्मा की पसंद के जानवर या वस्तुएँ हों) को बनाने का आदेश दिया जाता था।

चित्र बनाने वाले कलाकार को भी एक शुद्ध और पवित्र जीवन शैली अपनानी होती थी। चित्र शुरू करने से पहले उपवास रखना, विशेष प्रार्थनाएँ करना और मन को एकाग्र करना अनिवार्य था। पेंटिंग पूरी होने के बाद, कुडंघ उस चित्र के सामने मुर्गे या मदिरा की बलि या अर्पण करता था और मंत्रोच्चार के माध्यम से उस चित्र में 'प्राण-प्रतिष्ठा' करता था। इस अनुष्ठान के बाद वह दीवार महज़ एक भौतिक दीवार नहीं रह जाती थी, बल्कि वह देवताओं और पूर्वजों का साक्षात निवास स्थान बन जाती थी। इस प्रकार, पारंपरिक संदर्भ में सौरा कला का उद्देश्य सौंदर्यपरक आनंद (Aesthetic Pleasure) देना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक संवाद और संकट निवारण (Crisis Management) था।

4- सौरा कला के धरातल में बदलाव - मिट्टी से समकालीन सतहों तक का सफर -

सौरा चित्रकला में सबसे प्राथमिक और प्रत्यक्ष परिवर्तन इसके धरातल से देखने को मिलता है। माध्यम या सतह (Surface) की प्रकृति ही अंततः रेखाओं के प्रवाह और रंगों के स्थायित्व (Longevity) को निर्धारित करती है।

- **पारंपरिक मिट्टी की दीवार -** मूल रूप से इदिताल को घर की मिट्टी की दीवारों पर बनाया जाता था। इन दीवारों को गाय के गोबर और लाल मिट्टी (गेरू) के गाढ़े घोल से लीपा जाता था। यह

चित्र संख्या-3 -पारंपरिक गेरू भित्ति पर 'इदिताल' का अंकन करती सौरा कलाकारस्रोत-
https://www.google.com/search?sca_esv=d913da179c7

सतह खुरदरी और नमी को सोखने वाली होती थी। जब इस पर चावल के चूर्ण में पानी का घोल बना कर उससे आकृति बनाते हैं तो दीवार उस को अंदर तक सोख लेती थी। इससे पूरे चित्रण को एक सौम्य रंगत और बहुत ही प्राकृतिक, मिट्टी से जुड़ा हुआ रूप मिलता था।

- **कैनवास और आधुनिक कपड़े** - जब इस कला का व्यावसायिक रूप सामने आया तो कलाकारों ने टसर सिल्क, खादी, सूती कपड़े और तैयार कैनवास बोर्ड का उपयोग करना शुरू किया। ये सभी सतहें बिल्कुल सपाट और चिकनी होती हैं। इन पर रंग सतह के अंदर नहीं रमता, बल्कि ऊपर एक साफ़ परत बना देता है। इससे पेंटिंग बहुत चमकदार और आधुनिक दिखने लगती है।

चित्र संख्या- 4 - टसर सिल्क पर एक्रेलिक रंग बना इदिताल

स्रोत- https://tribesindia.com/product/xdc39

- **कांच की सतह (Glass)** - आज-कल आधुनिक घरों की सजावट के लिए कांच पर भी सौरा कला बनाई जा रही है। कांच बिल्कुल चिकना होता है और नमी को बिल्कुल नहीं सोखता। इस पर प्राकृतिक रंग नहीं टिक सकते, इसलिए कलाकार यहाँ इनेमल पेंट या गाढ़े ऐक्रेलिक रंगों का इस्तेमाल करते हैं। इस पर जब रोशनी पड़ती है, तो सौरा कला की ज्यामितीय आकृतियाँ बहुत आकर्षक प्रभाव पैदा करती हैं।

चित्र संख्या-5 कांच की सतह पर सौरा कला

स्रोत-ओडिशा राज्य जनजातीय संग्रहालय भुवनेश्वर

- **लकड़ी की सतह** - समकालीन बाजार में लकड़ी की ट्रे, कोस्टर, घड़ियों और फ़र्नीचर पर सौरा कला की भारी माँग है। लकड़ी एक अर्ध-शोषक माध्यम हैं। कलाकार अक्सर लकड़ी की सतह जैसे है, लकड़ी एक अर्ध-शोषक माध्यम है। कलाकार अक्सर लकड़ी के असली रंग और उनके प्राकृतिक रेशों (Grains) को छिपाते नहीं हैं, बल्कि उसे ही बैकग्राउंड की तरह इस्तेमाल करते हैं, जो इसे एक अलग गहराई देता है।

चित्र संख्या-6 लकड़ी की ट्रे पर सौरा कला

स्रोतhttps://advaitahandicrafts.com/products

5-रंगों का तकनीकी बदलाव : प्राकृतिक से रासायनिक वर्ण

माध्यमों के बदलने से सिर्फ पेंटिंग करने की जगह नहीं बदली बल्कि रंगों के पीछे का विज्ञान भी बदल गया है।

- **पारंपरिक दो रंगों का अनुशासन** – पुराने समय में सौरा कला सिर्फ दो रंगों के नियमों में बंधी थी। बैकग्राउंड हमेशा लाल-भूरा (गेरू) होता था और आकृतियाँ सफेद रंग से बनती थीं। सफेद रंग के लिए कच्चे चावल को पानी में भिगोकर बारीक पीसा जाता था, जिसे स्थानीय भाषा में 'हियुरा' कहते हैं। चावल के इस घोल में प्राकृतिक गोंद होता था जो चित्र दीवार पर कई साल तक चिपकाए रखता है, वहीं सौरा जनजाति के लोग विशेष पूजा पर काले रंग का प्रयोग करते थे जो दीये की कालिख से बनाया जाता था।
- **आधुनिक रासायनिक रंग -**

कैनवास, काँच और कपड़े, लकड़ी पर आते ही यह कला रंगों के बंधन से मुक्त हो गई। अब चावल के घोल की जगह एक्रेलिक कलर्स और फैब्रिक रंग का बोलबाला है। ये रंग बहुत जल्दी सूखते हैं और पानी से खराब नहीं होते, जिससे कलाकारों के समय की बचत होती है, साथ ही अब पारंपरिक लाल-सफेद के स्थान पर नीले, हरे, पीले और सफेद, काले बैकग्राउंड पर रंग-बिरंगी आकृतियाँ बनाई जा रही हैं, जो आज के ग्राहकों को ज्यादा पसंद आती हैं।

चित्र संख्या-7 - आधुनिक बहुरंगी पृष्ठभूमि (मल्टीकलर बैकग्राउंड) पर निर्मित समकालीन सौरा चित्रकला

स्रोत-ओडिशा राज्य जनजातीय संग्रहालय भुवनेश्वर

- **सौरा चित्रकला में टेक्सचर व्हाइट का प्रयोग-** आधुनिक सौरा चित्रकला में पारंपरिक सफेद रेखात्मक शैली को अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु टेक्सचर व्हाइट (उभरी हुई सफेद रंग-पेस्ट) का प्रयोग किया जाता है। पारंपरिक चित्रों में जहाँ सफेद रंग चावल के घोल (पिठौ) या प्राकृतिक माध्यमों से सपाट रूप में प्रयुक्त होता था, वहीं आधुनिक माध्यमों पर टेक्सचर व्हाइट के प्रयोग से आकृतियों में स्पष्ट उभार और त्रि-आयामी (3D) प्रभाव उत्पन्न होता है। इस तकनीक द्वारा निर्मित रेखाएँ और प्रतीक सतह से ऊपर उठे हुए प्रतीत होते हैं, जिससे सौरा कला की बिंदु-प्रधान एवं रेखात्मक संरचना और अधिक स्पष्ट हो जाती है। टेक्सचर व्हाइट का प्रयोग विशेष रूप से मानव-आकृतियों, पशु-पक्षियों, ज्यामितीय बॉर्डर तथा सजावटी अलंकरणों में किया जाता है। यह तकनीक सौरा कला की पारंपरिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए उसे आधुनिक सौंदर्यबोध के अनुरूप प्रस्तुत करती है।

6 - औजारों का इतिहास - बांस की कूची बनाम सिंथेटिक ब्रश -

हम किस साधन से चित्र बना रहे हैं; उससे रेखाओं का पूरा चरित्र बदल जाता है। सौरा कला में औजारों का बदलना इनकी दृश्य भाषा को बदलने में सबसे बड़ा कारण रहा है।

- **पारंपरिक कूची** – पुराने समय में सौरा कलाकार बाजार के ब्रशों का उपयोग नहीं करते थे। वे जंगली झाड़ियों या बांस के छोटे टुकड़ों के आगे के हिस्से को किसी पत्थर से कूट-कूटकर रेशेदार बना लेते थे, जिसे इनके रेशे असमान होते थे, जिससे खींची गई लाइनों में एक स्वाभाविक कंपन, अनियोजित मोटाई और खुरदरा प्रवाह आता था। यही इस कला की असली पहचान थी।
- **आधुनिक ब्रश और पेन -** आज के समय में कलाकार बाजार में मिलने वाले बारीक सिंथेटिक राउंड ब्रश और निब-पेन का इस्तेमाल करते हैं। ये औजार मशीनी और अत्यधिक सटीक होते हैं। इनसे जो लाइनें बनती हैं, उनमें कोई उतार-चढ़ाव या कंपन नहीं होता।

7 - चित्रों की बनावट और कंपोजिशन पर प्रभाव

जब कला का भौतिक धरातल बदला, तो खाली जगह (Space) को देखने का नज़रिया भी बदल गया:

- **बॉर्डर का चलन** – मिट्टी की दीवार पर काम करते समय जगह की कोई सीमा नहीं होती थी। कलाकार दीवार के एक कोने से शुरू करके पूरी दीवार पर कहानी को फैलाते चले जाते थे। वहाँ कोई बाहरी बॉर्डर नहीं होता था। इसके विपरीत, जब कलाकार कपड़े या चौकोर कैनवास बोर्ड पर काम करता है, तो जगह सीमित होती है। इस सीमा के कारण अब चित्रों में एक स्पष्ट और सजावटी 'बॉर्डर' बनाने का चलन अनिवार्य हो गया है।
- **बारीकी का बढ़ना** (Micro-Detailing) — पारंपरिक चित्रों में आकृतियाँ बहुत सरल और अमूर्त थीं। दो त्रिकोणों को आपस में जोड़कर धड़ बना दिया जाता था और सीधी रेखाओं से हाथ-पैर। चेहरे पर आँख, नाक या कान नहीं होते थे क्योंकि उनका उद्देश्य किसी व्यक्ति को दिखाना नहीं, बल्कि एक प्रतीक स्थापित करना था। लेकिन आज के बारीक ब्रश और पेन के कारण आधुनिक सौरा चित्रों में कपड़ों के पैटर्न, गहने और पक्षियों के पंखों की एक-एक लकीर को बहुत स्पष्टता से दिखाया जाता है।
- **नए प्रतीक** – पुराने चित्रों में जहाँ सिर्फ हाथी, घोड़े, रथ, सूरज, चंद्रमा और जनजातीय नृत्य के दृश्य होते थे; वहीं आज के नए चित्रों में बस, कार, साइकिल, बंदूकधारी सिपाही, हवाई जहाज़ और मोबाइल फोन जैसी आधुनिक चीज़ें भी दिखाई देने लगी हैं, जो बदलते सामाजिक परिवेश को दर्ज करती हैं।

8 - सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

यह तकनीकी बदलाव सिर्फ कला की सामग्रियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने सौरा समुदाय के भीतर एक मूक सामाजिक क्रांति को जन्म दिया है।

सबसे महत्वपूर्ण बदलाव लैंगिक भूमिकाओं (Gender Roles) में आया है। पारंपरिक व्यवस्था में इदिताल बनाने का अधिकार केवल पुरुष पुजारियों (कुडंघ) के पास सुरक्षित था, क्योंकि यह एक धार्मिक अनुष्ठान था। लेकिन जब यह कला कपड़ों, साड़ियों, कुर्तियों और घरेलू सजावट के उत्पादों पर आई, तो सौरा महिलाओं ने इसे एक बड़े कुटीर उद्योग के रूप में अपना लिया। आज सैकड़ों सौरा महिलाएँ इस कला के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर अपने परिवारों का संबल बन रही हैं।

हालांकि, इसका एक दूसरा पहलू भी है। जब यह कला किसी टी-शर्ट, कॉफी मग या व्यावसायिक चीज़ों पर प्रिंट होती है, तो इसका 'वि-पवित्रीकरण' (Desacralization) हो जाता है। वह चित्र जो कभी किसी पवित्र अनुष्ठान के रूप में पूजा जाता था, अब आधुनिक ड्राइंग रूम की केवल एक सजावटी वस्तु बनकर रह गया है।

परंतु, इस नकारात्मक पहलू के बावजूद, नए माध्यमों ने कला को दीर्घायु और स्थायित्व (Durability) दिया है। चावल के पेस्ट से दीवारों पर बनी पेंटिंग्स सीलन या मौसम के प्रभाव से एक-दो साल में नष्ट हो जाती थीं, लेकिन ऐक्रेलिक, कांच और लकड़ी के उपयोग ने इन चित्रों की आयु को दशकों लंबा कर दिया है, जिससे इस धरोहर का भौतिक संरक्षण बेहद आसान हो गया है।

9 - निष्कर्ष- सौरा चित्रकला का मिट्टी की कच्ची दीवारों से निकलकर समकालीन कैनवास, कांच और लकड़ी तक का यह सफ़र दिखाता है कि कोई भी जीवंत लोक कला समय के साथ खुद को ढालने के लिए मजबूर होती है। माध्यमों और औज़ारों के इस तकनीकी बदलाव ने जहाँ एक ओर पारंपरिक कलाकारों को आर्थिक संबल दिया है और सौरा कला को वैश्विक पहचान दिलाई है, वहीं दूसरी ओर इसके उस आदिम खुरदरेपन और आनुष्ठानिक पवित्रता को थोड़ा कम भी किया है।

भविष्य के लिए चुनौती इसी बात में है कि आधुनिक माध्यमों की सुगमता और स्थायित्व का लाभ तो उठाया जाए, लेकिन सौरा कला की जो मूल दृश्य भाषा है और उसकी जो आत्मा है, उसकी मौलिकता के साथ कोई समझौता न हो। एक कला रूप के रूप में सौरा चित्रकला का भविष्य इसी संतुलन पर टिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1- एलविन, वेरियर (1951). द ट्राइबल आर्ट ऑफ मिडल इंडिया. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

2- पटनायक, एन. (2005). ओडिशा की जनजातीय कला और संस्कृति. अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (SCSTRTI), भुवनेश्वर.

3- दास, एच. सी. (2012). सौरा इदिताल: परंपरा और समकालीन संक्रमण. जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज, 24(2), 115-28.

4- मोहंटी, बी. बी. (2018). जनजातीय कला का बाज़ारीकरण और उसका सांस्कृतिक प्रभाव. इंडियन आर्ट हिस्ट्री रिव्यू, 15(1), 45-58.

5- https://handicrafts.nic.in

6- https://shodhganga.inflibnet.ac.in

7- https://www.scstrti.in

8- https://odishamuseum.nic.in

9- https://www.academia.edu

10- https://nationalmuseumindia.gov.in